तो मैं क्या करूँ ....

किताबों की महक
मोबइल की चमक में
धीरे धीरे धुँधला रहा है।
तो मैं क्या करूँ ....

सड़कों पर गिरा हुआ सच
लोगों के भीड़ में रौंदा ~~अआ~~ गया।
तो मैं क्या करूँ
इस दुनिया में .....

बचपन की यादें
उँगलियों के नीचे लोक में
सिमट गई है।
तो मैं क्या करूँ .....

प्रकृति माँ की पुकार
कानों में गूँजता रहा है

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

पर सब खामोश थी
तो मैं क्या करूँ ....

जंग की राह,
एक तूफान तरह, बाँट रही है
अनेक जीवन को
तो मैं क्या करें ....

लड़की की आँखों में
रोक कर रही सपनों
धीरे धीरे गुम होती है।
तो मैं क्या करूँ ....

मानव की विकास केलिए
संस्कृति को पीछे छोड़ गए है।
तो मैं क्या करूँ
इस दुनिया में ....

दूसरों की दुख और खामोशी
का अर्थ समझ ने केलिए

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി..... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

समय नहीं मिले इस दुनिया में
तो मैं क्या करूँ ...

इस आधुनिक युग में
प्रकृति अकेला बैठता है।
इस कायनात को बदलने केलिए
तो मैं क्या करूँ ?...